भारत में अपने अस्तित्व के लिए संषर्घ कर रही संस्कृत का साठ देशों में अध्यापन जारी

दो दिवसीय भारतवर्षीय संस्कृत सम्मेलन का उद्घाटन, संस्कृत के अध्यापक-विद्यार्थी जुटे

नागपुर। 21 जनवरी। लोस सेवा

संस्कृत भाषा भले ही भारत में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है. लेकिन यह जर्मनी, पुर्तगाल, कनाडा, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, थाइलैंड सहित साठ से ज्यादा देशों में पढ़ाई जा रही है. साथ ही साल दर साल इसे पढ़ने वालों की संख्या बढ़ रही है. वहीं भारत के स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने को लेकर उदासीनता है. कहीं-कहीं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी इसमें रुचि ले रहे हैं. भारत में संस्कृत को आगे बढ़ाना है तो इसे तकनीकी रूप से सक्षम बनाना होगा.

ग्रथों का विमोचन करते उद्योगपति विश्राम जामदार, विभागीय आयुक्त अनूपकुमार, कुलगुरु उमा वैद्य, मधुसूदन पेन्ना और अन्य अतिथि. लोस फोटो

यह विचार कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से वसंतराव देशपांडे सभागृह में आयोजित दो दिवसीय भारतवर्षीय संस्कृत सम्मेलन में विद्वानों ने व्यक्त किए. इसमें देश के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, संस्थाओं के संस्कृत विद्वान और इससे अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोग हिस्सा ले रहे हैं. सम्मेलन का उद्घाटन विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के अध्यक्ष और उद्योगपति विश्राम जामदार के हाथों हुआ.

कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि विभागीय आयुक्त अनूपकुमार, बैद्यनाथ के सुरेश शर्मा, कार्यक्रम की अध्यक्ष व कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलगुरु डॉ. उमा वैद्य, कुलसचिव डॉ.अरविंद जोशी, परिषद की समन्वयक व संस्कृतेत्तर भाषा विभाग की अधिष्ठाता डॉ. नंदा पुरी, डॉ. कविता होले, भारतीय धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति संकाय के अधिष्ठाता डॉ. मधुसूदन पेन्ना, वेदविद्या संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सी.जी. विजयकुमार उपस्थित थे.

महाकवि कालिदास संस्कृतव्रती राष्ट्रीय पुरस्कार संस्कृत के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व संचालक प्रो. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी को प्रदान किया गया. पुरस्कार उनकी पुत्री आशापति शास्त्री ने स्वीकारा. विश्वविद्यालय के डीजी ब्लॉक का लोकार्पण किया गया. संस्कृत में शोधकार्य कर रहे विद्वानों के शोधग्रंथों का विमोचन हुआ. विश्राम जामदार, अनूप कुमार ने सम्मेलन के आयोजन के लिए विश्वविद्यालय की प्रशंसा की. अध्यक्षीय भाषण डॉ. उमा वैद्य ने दिया. उद्घाटन सत्र का संचालन प्रा. पराग जोशी व डॉ.रेणुका बोकारे और आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. अरविंद जोशी ने किया. इस अवसर पर प्रमुख रुप से मुकुल कानिटकर, इग्नू हिंदी विभाग के प्रमुख जितेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, दिलीप म्हैसालकर, डॉ. कुसुम पटोरिया, प्रभाकर भातखंडे, डॉ. गौरी माहुलीकर उपस्थित थे.

उद्घाटन के बाद संस्कृत भाषा के भविष्य और दिशा पर परिसंवाद का आयोजन किया गया. इसमें भारत के कई स्थानों से आए संस्कृत विद्वान, शिक्षणगण और रसिकजन उपस्थित थे.